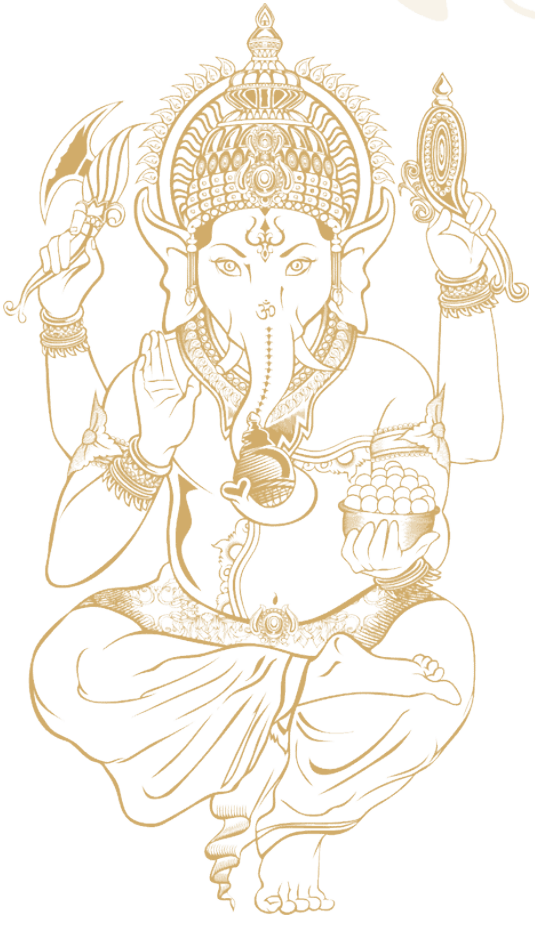

Mr.

10 Oct 2025

11:55 AM

Jaipur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119721901

तिथि 10/10/2025 **समय** 11:55:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Jaipur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:04
अक्षांश 26:53:00 उत्तर **रेखांश** 75:50:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	12:44:48 घं
वेलान्तर	00:13:01 घं
सूर्योदय	06:23:45 घं
सूर्यास्त	18:03:13 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	कार्तिक
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	कृतिका
योग	सिद्धि
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	उ-उदय
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

सूर्य 1वर्ष 6मा 21दि

सूर्य

10/10/2025
02/05/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/10/2025
बुध	25/12/2025
केतु	02/05/2026
शुक्र	02/05/2027

योगिनी

उल्का 1वर्ष 6मा 21दि

उल्का

10/10/2025
02/05/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/10/2025
धान्या	31/10/2025
भ्रामरी	02/07/2026
भद्रिका	02/05/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:24:46	धनु	मूल	2	केतु	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			22:59:33	कन्या	हस्त	4	चंद्र	सूर्य	सम राशि	1.54	अमात्य	पितृ	सम्पत
चंद्र			06:32:19	वृष	कृतिका	3	सूर्य	बुध	मूलत्रिकोण	1.07	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			18:00:00	तुला	स्वाति	4	राहु	सूर्य	सम राशि	0.99	भ्रातृ	भ्रातृ	क्षेम
बुध			11:05:09	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मित्र राशि	0.93	मातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			29:16:15	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.35	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र			01:17:40	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	नीच राशि	1.49	कलत्र	कलत्र	जन्म
शनि	व		02:51:43	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.99	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		23:49:42	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		23:49:42	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

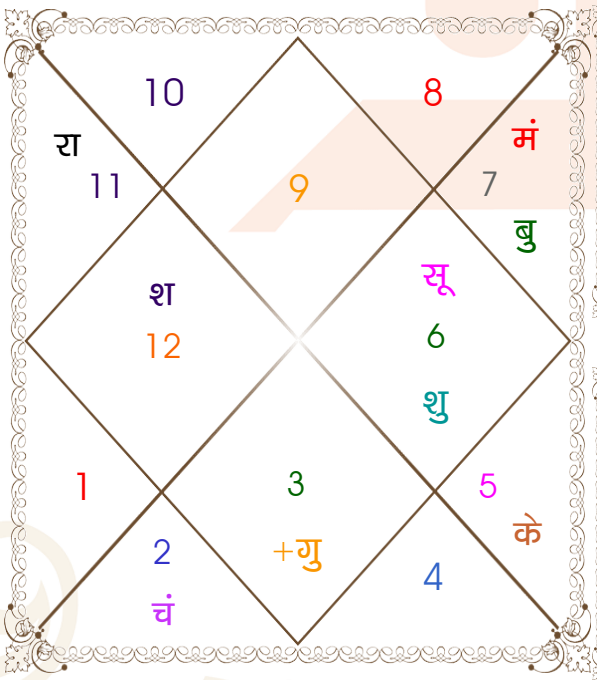

चन्द्र कुंडली

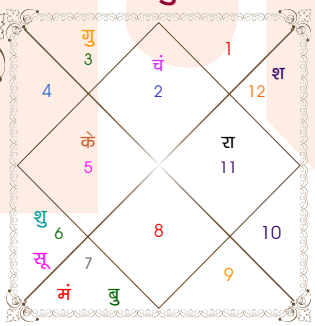

नवमांश कुंडली

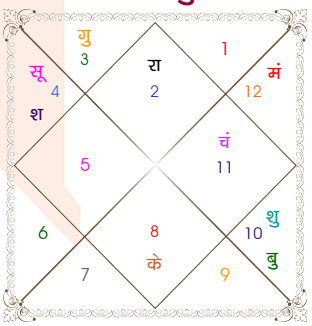

सर्वाष्टकवर्ग

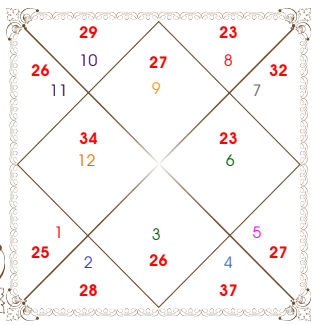

दशमांश कुंडली

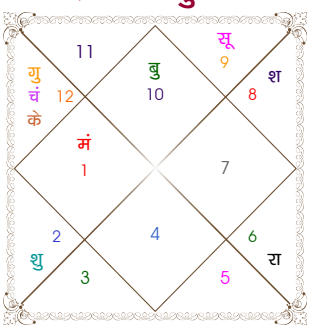

नक्षत्रफल

आप का जन्म कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, योनि मेष, नाडी अन्त्य, गण राक्षस तथा वर्ग गरूङ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का प्रथमाक्षर "उ" या "ऊ" से प्रारम्भ होगा। यथा- उमेश, उमाशंकर आदि।

सामान्य रूप से आप कंजूस प्रवृति के व्यक्ति होंगे। धन संग्रह में आप कुशलता का परिचय देंगे परन्तु व्यय करने में अत्यन्त ही हिचकिचाहट का प्रदर्शन करेंगे। पापकर्मों या बुरे कर्मों में आप अधिक तल्लीन रहेंगे। आपके अधिकांश कार्यों से किसी को सुख की प्राप्ति नहीं होगी अपितु कष्ट ही पहुँचेगा। आप गहरी नींद में सोना पसन्द करेंगे फलस्वरूप आपके मन में कार्य या परिश्रम करने की इच्छा का अभाव रहेगा। अपने इसी आलस्य के कारण आपको यदा कदा भूख से भी व्याकुल होना पडेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

अधिक मात्रा में भोजन करना आपको रूचिकर लगेगा। आप किसी की बात को सहने में असमर्थ रहेंगे तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध भी रहेंगे। तेज भी आपके चेहरे पर स्पष्ट रूप से रहेगा।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्याध्ययन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इसे प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे। विद्या ही आपका धन होगा तथा इसी के प्रभाव से आप विद्वान कहलाएंगे तथा उच्चाधिकार प्राप्त पद की भी प्राप्ति कर सकेंगे।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी होता है।

जीवन में यदा कदा ही आप सत्य का अनुसरण करेंगे अन्यथा असत्य के मार्ग पर ही चलेंगे। इधर उधर बेकार घूमना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। वाणी भी आपकी कठोर होगी जो श्रोता को अच्छी नहीं लगेगी। कृतघ्नता के अवगुण से भी आप युक्त रहेंगे अर्थात् आप अपने ऊपर किए गयें किसी के भी उपकार को नहीं मानेंगे। अपने कर्तव्यो का भी आप पूर्ण रूप से पालन नहीं करेंगे। अतः घर परिवार वाले अधिकांश असन्तुष्ट ही रहेंगे। धन भी पूर्ण रूप से स्थाई आपके पास नहीं रहेगा।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतध्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतध्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुए है। अतः आपका गौर वर्ण होगा तथा गाल अल्प रूप से स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का समावेश आपके स्वभाव में रहेगा। उत्तमकुल में उत्पन्न लोगों के आप सेवा करने वाले होंगे तथा इनके प्रति आपकी गहन श्रद्धा होगी। ब्राहमणों तथा गुरूओं का भी श्रद्धापूर्वक आदर तथा सम्मान करेंगे। आपकी प्रवृति वातकफ युक्त होगी तथा बुद्धि पूर्ण रूप से विकसित रहेगी। आप प्रायः सुखी तथा दानशीलता के भाव से युक्त रहेंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में सर्वसुखों का उपभोग करने वाले होंगे। शुद्धता तथा सफाई का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा समस्त कार्यों को सिद्ध करने में समर्थवान होंगे। आप पूर्ण रूप से बुद्धि तथा बल से युक्त रहेंगे। धनागम प्रचुर मात्रा में होने से आप विलासी प्रकृति के हो जाएंगे तथा सभी भौतिक सुखों पर उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता आप पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। आपके सभी मित्र अच्छे आचरण तथा सद्गुणों से युक्त होंगे तथा मित्रता भी आपकी दीर्घकाल तक चलेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुखमंडल तथा जानुभाग दीर्घाकार होंगे। आपके जीवन के प्रथम दो भाग परिश्रम तथा कष्टपूर्वक व्यतीत होंगे तथा अन्तिम दो भाग सुखी तथा आनन्दपूर्वक व्यतीत होगे। स्त्री वर्ग से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगे। आपकी प्रवृति क्षमाशील होगी तथा सामान्य गलतियों और अपराधियों पर किसी को भी क्षमादान प्रदान करेंगे। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्ट सहना पड़ेगा तथा अत्यन्त कठोर परिश्रम भी करना पड़ेगा। आपकी पीठ, चेहरे या काख में तिल, मस्से या चोट का निशान हो सकता है।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपके पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक संख्या में होंगी तथा आपका आचरण तथा व्यवहार श्रेष्ठ रहेगा। आप आजीवन धन का उपभोग करेंगे तथा आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल से युक्त तथा घने काले घुंघराले बालों वाले होंगे। सैक्स के प्रति आप अधिक ही आर्कषित रहेंगे। आपका यश चारों तरफ फैलेगा। आपकी आखें बड़ी एवं मोटी होंगी। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय होंगी तथा सही गलत का फैसला पुष्ट रहेंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्दगति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्तकार्यों को दक्षता से पूर्ण करेंगे। आप अपने भरसक प्रयत्न से अन्यजनों की भलाई करने का भी प्रयास करेंगे। अच्छे तथा पुण्य के कार्य आप सदैव करते रहेंगे तथा इन्ही से हमेशा सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमंडल की विशालाकृति होगी तथा आप सविलास गमनप्रिय प्रकृति के होंगे। कष्टों को आप सहन करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारों से सम्पन्न होंगे। धन एवं ऐश्वर्य से आप जीवनपर्यन्त समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की प्रबलता रहेगी। स्त्री वर्ग में भी आप लोकप्रिय रहेंगे। तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आप सुन्दर स्वभाव वाले तथा विष्णु एवं शिव के आराधना करने वाले भी होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ है। अतः आप कभी कभी अधिक बातें बोलेंगे। हृदय में भी आपका दया का भाव अल्प रहेगा। आपको क्रोध अधिक आएगा तथा छोटी छोटी बातों पर आप उत्तेजित हो जाएंगे। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाएंगे। बल का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। लेकिन आप सबसे वाद विवाद करते रहेंगे। इससे अन्य लोग आपको अच्छा नही समझेंगे फलस्वरूप आपका अधिकांश लोगों से विरोध रहेगा। अतः संयमपूर्वक आपको अन्य जनों से वार्तालाप करना चाहिए जिससे किसी भी प्रकार से अप्रिय स्थिति उत्पन्न न हो सके।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही चेहरे की सुन्दरता भी मध्यम होगी। कभी कभी आप ऐसे कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे कि सुनने वाले देखते ही रह जाएंगे। इसलिए अपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही

कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप अत्यन्त उत्साही पुरूष होंगे जो कार्य करेंगे उसे उत्साह पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप योद्धा तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा कठिन से कठिन कार्य करने में समर्थ होंगे। धन ऐश्वर्य से आप आजीवन युक्त रहेंगे। नैसर्गिक रूप से परोपकार की भावना आपके मन में रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप उसे पूर्ण करेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही

आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी, अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशिस्थ चन्द्रमा यह समय अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तथा अमावस्या में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन आदि कोई भी शुभ कार्य न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, चतुर्थ प्रहर या शनिवार को शुभ कार्य में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए खराब समय चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि अथवा नौकरी में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, शहद इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के 20 हजार जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।